कुम्भ मेला में वेद प्रचार शिविर

सन् 1986 में हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ मेला होने जा रहा था। ऐसे अवसरों पर देश के सभी प्रांतों से लाखों की संख्या में पौराणिक हिन्दू गहरी आस्था व श्रद्धा के वशीभूत होकर यहाँ पहुँचते रहे हैं। इस बार भी ऐसा ही होने जा रहा था। इस अवसर का लाभ उठाते हुए कभी महर्षि दयानन्द ने अपनी पाखण्ड-खण्डनि पताका फहरा कर धर्म ध्वजियों को पाखण्ड और अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया था। स्वामी इन्द्रवेश जी ने स्वधर्म और स्वभाव के अनुरूप इस अवसर पर हरिद्वार में एक विशाल वेद प्रचार शिविर लगाने का संकल्प लिया। इस निमित्त आवश्यक योजना व तैयारी करने के लिए उन्होंने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के सदस्यों की एक बैठक बुलाना समयोचित समझा। सन् 1983 के महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह के अवसर पर जिस अन्तर्राष्ट्रीय विरक्त मण्डल का गठन हुआ था और जिसके अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी और महासचिव स्वामी दिव्यानन्द जी थे उसके सदस्यों को भी इस बैठक में आमन्त्रित किया गया। गम्भीर विचार मंथन के पश्चात् वेद प्रचार शिविर की रूपरेखा, कार्य योजना, आर्थिक संसाधन जुटाने का कार्यक्रम तय हुआ। इस शिविर को लेकर सदस्यों में भारी उत्साह था क्योंकि एक अर्से के बाद आर्य समाज का एक बड़ा कार्यक्रम हाथ में लिया गया था। इस शिविर को सफल बनाने के लिए खुद स्वामी इन्द्रवेश जी ने भारी पुरुषार्थ किया। स्वामी दिव्यानन्द,

स्वामी ओमवेश, प्रेमपाल शास्त्री, डा. मथुरा सिंह जी आदि ने भी अथक परिश्रम किया। तथा श्री जगवीर सिंह ने अपने साथियों के साथ इसमें पूरी ताकत झोंक दी।

60 साल के बाद कुम्भ मेला अवसर पर आर्य समाज ऐसा आयोजन करने का साहस दिखाने जा रहा था। 60 साल पहले जब ऐसा प्रयास आर्य समाज द्वारा किया गया था, तो पौराणिक पाखंडियों ने आर्य शिविर के टैंट शामियाने उखाड़ कर नहर में फेंक दिये थे और हलवाईयों ने गरम चाशनी बेलचों में भर-भरकर उन आर्य समाजियों पर फेंकनी शुरू कर दी थी जो जुलूस निकाल रहे थे। इस बीच जब-जब भी पुनः शिविर लगाने का किसी ने वहाँ प्रयास किया तो पुलिस-प्रशासन और कुम्भ मेला समिति ने उनके लिए जमीन आबंटन करने से साफ इंकार कर दिया। इस वेद प्रचार शिविर के लिए कुम्भ मेला क्षेत्र में जमीन आबंटित होना ही एक बड़ी सफलता मानी जा रही थी। इस सफलता को लेकर नेताओं व कार्यकर्त्ताओं का मनोबल काफी बढ़ गया था अतः सभी उत्साहपूर्वक इसकी तैयारी में लग गये। यह परिश्रम रंग लाया, फलतः पंजाब से दो ट्रक चावल और घी माता जगदीश रानी और श्री ओमप्रकाश आर्य के सहयोग से इकट्ठा हुआ व नकद राशि भी यहां से मिली। दिल्ली से 130 बोरी आटा, 30 बोरी दाल, मसाले, हवन सामग्री व अन्य सामान डॉ. मथुरा सिंह, प्रेमपाल शास्त्री, माता लीलावती आदि के सहयोग से एकत्र हुआ। तराई क्षेत्र से चावल इकट्ठा करने में स्वामी इन्देवेश जी व स्वामी दिव्यानन्द जी ने अभियान चलाया।

कुम्भ मेला क्षेत्र में महर्षि दयानन्द नगर बसा कर वेद प्रचार शिविर का यह आयोजन निश्चय ही अपने आप में एक भव्य और ऐतिहासिक आयोजन था। इस वेद प्रचार शिविर की धाक यह रही कि पौराणिक जगत् में इस शिविर की चर्चा तीव्रता से होने लगी। पंत द्वीप में एक नम्बर का प्लाट, जिस पर यह नगर बसाया गया था, सबकी नजरों में सहज ही आ जाता था। लगभग दो एकड़ जमीन का यह प्लॉट स्वामी इन्द्रवेश जी ने संघर्ष करके प्राप्त किया था। इसे चारों ओर से घेर कर इसमें प्रचार-सभागार, भव्य यज्ञशाला, भव्य प्रदर्शनी प्रकोष्ठ, भोजनालय, अन्न भण्डार गृह, कार्यालय, स्वागत कक्ष, योग केन्द्र, स्नान-गृह आदि की अलग-अलग व्यवस्था की गई थी। एक विशेषता यह रही कि तीन लाख रुपये का टैंट का सामान खरीद कर यहाँ लाया गया था।

इस वेद प्रचार शिविर के मुख्य आकर्षण थे - स्वामी दिव्यानन्द जी के ब्रह्मत्व में होने वाला चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, प्रातः सायं का योग शिविर, विश्वपाल जयंत का शक्ति प्रदर्शन व वीरेन्द्र पंवार का शरीर सौष्ठव प्रदर्शन कार्यक्रम, विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों के साथ समन्वय बैठक आयोजित कर धर्म चर्चा करना, विविध विषयों पर आयोजित शास्त्रार्थ, विशेष ऋषि लंगर की व्यवस्था। विशेष बात यह रही कि अखिल भारतीय संत समिति के संस्थापक स्वामी वामदेव, अनेक शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर और लगभग डेढ़ हजार साधु संत महर्षि दयानन्द नगर में पधारे। शिविर में उनका अतिथि सत्कार किया गया। आर्य मनीषियों ने जन्मना जातिवाद, शराबखोरी, गोहत्या, आतंकवाद जैसे मुद्दों पर उनके साथ गहन चिन्तन संवाद किया। हिन्दू समाज में आ गई अन्य कुरीतियों की ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट किया गया। अधिकांश मुद्दों पर उनके साथ सहमति बनी लेकिन जन्मना जातपात के मुद्दे पर सिद्धान्ततः सहमत होते हुए भी इस पर खुल कर बोलने से उन्होंने मना किया।

वेद प्रचार शिविर में सहभोज का आयोजन कर मेले के लगभग पाँच हजार सफाई कर्मियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया गया और साधु समाज को भी उनके साथ बैठाया गया। इस सहभोज में बनारस के पास के एक मेला पुलिस अधिकारी मिश्रा करके थे वे भी आ फंसे थे। सहभोज में बैठने को वे तैयार नहीं हुए, यज्ञ-शेष भी संकोच से ग्रहण किया लेकिन खाया नहीं, घर ले जाकर बांट कर खाऊंगा यह कह कर ले गये और बाहर जाकर किसी सिपाही को दे दिया। इस तरह की संकीर्ण मानसिकता का सुशिक्षित लोगों में पाया जाना यह संकेत देता है कि यह समस्या काफी गम्भीर है लेकिन इसे मिटाने के आर्य समाज के प्रयास नगण्य हैं।

ऐसे ही एक अन्य अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी का यज्ञ पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। उन्होंने आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा कि हमें बजाये दूसरों की शुद्धि करने के अपनी ही शुद्धि पर बल देना चाहिए। हम आर्य समाजी शुद्धि शुद्धि तो चिल्लाते हैं लेकिन शुद्धि करने में जो लोग सबसे आगे-आगे चल रहे हैं उन भंगियों को हीनता की दृष्टि से देखते हैं। जब हम सभी परमात्मा की संतान हैं तो यह भेद-भाव, यह अस्पृश्यता, यह छूतछात का भाव क्यों? आर्य समाज इस जड़ता पर प्रहार करना चाहता है और आप सबका जो यहाँ बैठे हुए हैं मैं आह्वान करता हूँ कि आओ आप और हम सभी मिलकर इन सफाईकर्मियों को यह अहसास करा दें कि जो काम आप सदियों से कर रहे हैं वह काम छोटा काम नहीं, एक महान् काम है। अब हम सभी उठकर कुम्भ क्षेत्र में बने शौचालयों की सफाई करने चलेंगे और भगवान् को साक्षी मान कर, वेद को साक्षी मानकर कर्मयोग को आत्मसात करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि कोई भी काम छोटा नहीं है, हीन नहीं है, घृणा के योग्य नहीं है।

स्वामी अग्निवेश जी के इस आह्वान पर पौराणिक लोग स्तब्ध रह गये, असहज हो उठे। आश्चर्य भाव से स्वामी जी के आह्वान का वह खण्डन तो नहीं कर पा रहे थे लेकिन इस सफाई अभियान में सहभागी बनने में संकोच अवश्य कर रहे थे। स्वामी अग्निवेश जी के साथ जब स्वामी दिव्यानन्द जी और स्वामी इन्द्रवेश जी भी उठ कर शौचालयों की ओर बढ़े तो साधु समाज को भी इसमें सहभागी बनना पड़ा। स्वामी अग्निवेश जी ने यह प्रयोग अम्बाला जेल में और फिर शिक्षा मंत्री रहते हुए यमुनानगर में भी किया था।

इस वेद प्रचार शिविर ने बी.बी.सी. टीम को भी अपनी ओर आकर्षित किया। इस टीम ने शिविर आयोजकों से साक्षात्कार लेते हुए इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि हम पहली बार यहाँ यज्ञ वेदी पर ब्रह्मा के रूप में महिला को देख रहे हैं। उनका संकेत कन्या गुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारणियों व उनकी आचार्या की ओर था। 'हिस्टोरीकल मूवमेंट' शीर्षक से यह कार्यक्रम बी.बी.सी. ने अपने यहाँ से बाद में प्रसारित भी किया था। इस चतुर्वेद पारायण महायज्ञ को सफल बनाने में आर्य समाज शक्ति नगर दिल्ली की माता लीलावती जी, श्री ओमप्रकाश गुप्त (भाई जी) व अन्य महिला सदस्याओं ने 40 दिन तक निरन्तर योगदान दिया था।

वेद प्रचार शिविर से लगातार तीन दिन तक शास्त्रार्थ करने की चुनौती पौराणिक मण्डल को माईक द्वारा, पर्चे बांट कर और निमन्त्रण-पत्र भेज कर शास्त्रार्थ महारथी आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री द्वारा दी जाती रही लेकिन कोई भी नहीं आया।

इस अवसर पर लगभग छह लोगों ने स्वामी इन्द्रवेश जी से संन्यास की दीक्षा ली जिनमें स्वामी प्रकाशानन्द (हिसार), स्वामी योगानन्द (अलीगढ़), स्वामी योगानन्द (मीरापुर) आदि थे।

इस अवसर पर व्यापक रूप से साहित्य वितरण भी हुआ। आर्य समाज, नया बांस, दिल्ली के श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने हजारों ट्रैक्ट यहाँ निःशुल्क बाँटे। पन्तद्वीप क्षेत्र से हर की पौड़ी तक विशाल शोभायात्रा भी इस अवसर पर निकाली गई जिसमें हजारों आर्य जनों ने सम्मिलित होकर संगठन शक्ति का प्रदर्शन किया। हर की पौड़ी पर श्री जगवीरसिंह व स्वामी इन्दवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन भी हुआ।

इस वेद प्रचार शिविर का एक सुखद प्रसंग यह रहा कि गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त समारोह में पधारे आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व के सामने इस शिविर का प्रशस्ति गान जब लोग करने लगे तो आमने सामने का घोर विरोध रखने वाले ये दिग्गज अपने आप को इस शिविर में आने से न रोक सके। बिना कोई सूचना दिये जब स्वामी ओमानन्द जी महाराज, लाला रामगोपाल जी शालवाले, सच्चिदानन्द जी शास्त्री और स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा) आदि शिविर में पहुंचे तो शिविर संयोजक श्री जगवीर सिंह जी उनको वहां देख कर दंग रह गये। उन्होंने आगे बढ़ कर इन सभी महानुभावों का स्वागत किया और जलपान के लिए साग्रह निवेदन किया। स्वामी ओमानन्द जी ने कहा - वकील साहब! यह औपचारिकता तो बाद में भी पूरी हो जायेगी, पहले मुझे अपना अन्न भण्डार दिखाओ जिसकी बहुत चर्चा हो रही है। जगवीर जी उनको अन्न भण्डार में ले गये जो बोरियों से ठसाठस भरा हुआ था। स्वामी जी यह सब देख कर दांतों तले अंगुली दबा गये।

उन्हें अनुमान ही नहीं था कि कितनी तैयारी के साथ यह शिविर लगाया गया था।

इस प्रकार कुल मिलाकर इस वेद प्रचार शिविर का यह प्रभाव रहा कि कार्यकर्त्ताओं का आत्मविश्वास बढ़ा, नेतृत्व के प्रति उसका विश्वास जगा, पौराणिकों पर धाक जमी, विरोधी लोगों को भी परिषद् की ताकत व कार्यशैली का अहसास हुआ, आर्य समाज में सर्वत्र इसकी चर्चा तेजी से फैली और सबसे बड़ी बात यह हुई कि संगठन में फिर से नई चेतना व शक्ति का संचार हुआ जिससे आगे चल कर अनेक नये कार्यक्रम हाथ में लिये जा सके।

30 अप्रैल 1986 को कुम्भ मेला समाप्ति पर योगधाम ज्वालापुर में कुम्भ मेला वेद प्रचार समिति की बैठक हुई जिसमें वेद प्रचार शिविर की 40 दिन की गतिविधियों की समीक्षा हुई, आय-व्यय पत्र प्रस्तुत हुआ और भविष्य के लिए रणनीति तैयार की गई। बचे हुए सामान का निष्पादन करने के उपायों पर भी विचार किया गया।